Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed)
Journal home page: www.jmsjournals.in, **ISSN: 2454-8367**
Vol. 11, Issue-IV, April 2026

सोशल मीडिया और युवा रोजगार के अवसर: डिजिटल अर्थव्यवस्था, कौशल विकास एवं उद्यमिता के संदर्भ में एक अनुभवजन्य अध्ययन

(Social Media and Youth Employment Opportunities: An Empirical Study in the Context of Digital Economy, Skill Development, and Entrepreneurship)

Kanchan Suryavanshi[a,*], **Dr. Prachi Chaturvedi**[b,**]

[a] *Ph.D. Scholar, Mansarovar Global University, Sehore, Madhya Pradesh, India.*
[b] *Professor, Mansarovar Global University, Sehore, Madhya Pradesh, India.*

KEYWORDS

सोशल मीडिया, युवा रोजगार, डिजिटल रोजगार, डिजिटल अर्थव्यवस्था, कौशल विकास, फ्रीलांसिंग, कंटेंट क्रिएशन, डिजिटल मार्केटिंग, उद्यमिता, भोपाल।

ABSTRACT

वर्तमान डिजिटल युग में सोशल मीडिया केवल संचार का माध्यम नहीं रह गया है, बल्कि यह रोजगार, उद्यमिता, कौशल विकास तथा आर्थिक सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण उपकरण बन चुका है। विशेष रूप से युवाओं के मध्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों के बढ़ते उपयोग ने रोजगार खोज, व्यावसायिक नेटवर्किंग, स्वरोजगार तथा डिजिटल उद्यमिता के नए आयाम विकसित किए हैं। भारत में स्मार्टफोन और इंटरनेट की बढ़ती पहुँच ने युवाओं के लिए डिजिटल रोजगार के विविध अवसर उपलब्ध कराए हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भोपाल शहर के संदर्भ में सोशल मीडिया और युवा रोजगार अवसरों के मध्य संबंध का विश्लेषण करना है। भोपाल, जो मध्य प्रदेश की राजधानी होने के साथ–साथ एक उभरते हुए शैक्षणिक एवं डिजिटल केंद्र के रूप में विकसित हो रहा है, युवाओं के लिए डिजिटल अर्थव्यवस्था से जुड़ी संभावनाओं का महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़े प्रश्नावली आधारित सर्वेक्षण के माध्यम से संकलित किए गए, जबकि द्वितीयक आँकड़ों के लिए शोध–पत्रों, सरकारी रिपोर्टों तथा विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोतों का अध्ययन किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि भोपाल के लगभग 68 प्रतिशत युवा रोजगार प्राप्त करने, आय अर्जित करने अथवा व्यावसायिक अवसरों की खोज के लिए सोशल मीडिया का सक्रिय उपयोग करते हैं। कंटेंट क्रिएशन, डिजिटल मार्केटिंग, फ्रीलांसिंग, ई–कॉमर्स तथा ऑनलाइन शिक्षा जैसे क्षेत्र युवाओं के लिए प्रमुख रोजगार विकल्प के रूप में उभरकर सामने आए हैं। इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया युवाओं के कौशल विकास, व्यक्तिगत ब्रांडिंग तथा व्यावसायिक नेटवर्क निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। हालाँकि, डिजिटल साक्षरता की कमी, साइबर सुरक्षा संबंधी जोखिम, भ्रामक रोजगार विज्ञापन, अपर्याप्त डिजिटल अवसंरचना तथा नीति–स्तरीय चुनौतियाँ सोशल मीडिया आधारित रोजगार के समक्ष प्रमुख बाधाएँ हैं। अध्ययन निष्कर्ष रूप में यह प्रतिपादित करता है कि यदि युवाओं को डिजिटल कौशल, साइबर जागरूकता तथा उपयुक्त नीतिगत समर्थन प्रदान किया जाए, तो सोशल मीडिया रोजगार सृजन, उद्यमिता विकास और आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने का प्रभावी माध्यम सिद्ध हो सकता है।

1. प्रस्तावना

इक्कीसवीं सदी में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र

Corresponding author
***E-mail:** kanchan.editor@gmail.com (Kanchan Suryavanshi). http/orcid.org/0009-0001-7100-926X
DOI: https://doi.org/10.53724/jmsg/v11n4.02
Received 6th Feb. 2026; Accepted 20th March 2026
Available online 30th April 2026
2454-8367/©2026 The Journal. Published by Jai Maa Saraswati Gyandayini e-Journal (Publisher: Welfare Universe). This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

विकास ने सामाजिक, आर्थिक तथा व्यावसायिक संरचनाओं में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। इंटरनेट, स्मार्टफोन तथा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों की बढ़ती उपलब्धता ने व्यक्तियों के संवाद, सूचना प्राप्ति, शिक्षा, व्यवसाय तथा रोजगार संबंधी गतिविधियों को नई दिशा प्रदान की है। विशेष रूप से युवा वर्ग ने डिजिटल तकनीकों को सबसे अधिक अपनाया है, जिसके परिणामस्वरूप रोजगार प्राप्त करने, कौशल अर्जित करने तथा स्वरोजगार के अवसरों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। आज सोशल मीडिया केवल सामाजिक संपर्क या मनोरंजन का माध्यम नहीं रह गया है, बल्कि यह आर्थिक गतिविधियों, व्यावसायिक नेटवर्किंग तथा रोजगार सृजन का एक महत्वपूर्ण मंच बन चुका है (कापलान, ए. एम., एवं हैनलिन, एम. (2010)।

डिजिटल अर्थव्यवस्था के विस्तार के साथ रोजगार की पारंपरिक अवधारणाओं में भी परिवर्तन आया है। पूर्व में रोजगार का अर्थ मुख्यतः सरकारी या निजी संस्थानों में स्थायी नौकरी प्राप्त करना माना जाता था, जबकि वर्तमान समय में डिजिटल प्लेटफॉर्म आधारित कार्य, फ्रीलांसिंग, कंटेंट क्रिएशन, डिजिटल मार्केटिंग, ई–कॉमर्स तथा ऑनलाइन उद्यमिता रोजगार के नए स्वरूप के रूप में उभरकर सामने आए हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, लिंक्डइन, एक्स (पूर्व में ट्विटर), टेलीग्राम तथा व्हाट्सऐप युवाओं को न केवल सूचना एवं अवसरों तक पहुँच प्रदान करते हैं, बल्कि उन्हें अपनी प्रतिभा, कौशल और रचनात्मकता को वैश्विक स्तर पर प्रदर्शित करने का अवसर भी उपलब्ध कराते हैं (किएट्ज़मैन, जे. एच., अन्य (2011)।

भारत विश्व के उन देशों में शामिल है जहाँ युवा जनसंख्या का अनुपात अत्यधिक है। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (UNFPA) के अनुसार भारत विश्व की सबसे बड़ी युवा आबादी वाले देशों में से एक है, जहाँ युवाओं की संख्या आर्थिक विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसी संदर्भ में डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, स्किल इंडिया तथा प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान जैसी सरकारी पहलों ने युवाओं को डिजिटल तकनीकों और ऑनलाइन रोजगार के अवसरों से जोड़ने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इंटरनेट और स्मार्टफोन की बढ़ती पहुँच ने युवाओं को राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध रोजगार अवसरों तक पहुँचने में सक्षम बनाया है (इंटरनेशनल लेबर ऑर्गेनाइजेशन (आईएलओ). (2024).।

सोशल मीडिया का प्रभाव केवल रोजगार खोजने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह कौशल विकास, व्यक्तिगत ब्रांडिंग, व्यावसायिक नेटवर्क निर्माण तथा उद्यमिता को भी प्रोत्साहित करता है। लिंक्डइन जैसे पेशेवर नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म रोजगारदाताओं और नौकरी खोजने वालों के बीच संपर्क स्थापित करने में सहायक हैं, जबकि यूट्यूब, इंस्टाग्राम और फेसबुक जैसे प्लेटफॉर्म कंटेंट क्रिएशन एवं डिजिटल मार्केटिंग के माध्यम से आय अर्जित करने के अवसर प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, फ्रीलांसिंग प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया आधारित व्यवसायों ने युवाओं के लिए आत्मनिर्भरता तथा आर्थिक स्वतंत्रता के नए मार्ग प्रशस्त किए हैं (लियोनार्ड, पी., एवं वाइल्ड, आर. (2019)।

मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल शिक्षा, प्रशासन, प्रौद्योगिकी तथा सेवा क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। पिछले कुछ वर्षों में यह शहर उच्च शिक्षा, स्टार्टअप संस्कृति और डिजिटल नवाचार के क्षेत्र में तेजी से विकसित हुआ है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भोपाल, मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, राष्ट्रीय विधि संस्थान

विश्वविद्यालय तथा अन्य प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों की उपस्थिति ने भोपाल को युवाओं के लिए एक प्रमुख शैक्षणिक एवं व्यावसायिक केंद्र के रूप में स्थापित किया है। इन संस्थानों से प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में विद्यार्थी स्नातक और स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त कर रोजगार बाजार में प्रवेश करते हैं। ऐसे परिदृश्य में सोशल मीडिया युवाओं के लिए रोजगार, नेटवर्किंग, कौशल विकास और उद्यमिता का महत्वपूर्ण साधन बनता जा रहा है।

हालाँकि सोशल मीडिया रोजगार के अनेक अवसर प्रदान करता है, फिर भी इसके समक्ष कई चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। डिजिटल साक्षरता की कमी, साइबर धोखाधड़ी, भ्रामक रोजगार विज्ञापन, डेटा गोपनीयता संबंधी चिंताएँ तथा डिजिटल अवसंरचना की असमान उपलब्धता युवाओं के लिए बाधा उत्पन्न करती हैं। इसके अतिरिक्त, सोशल मीडिया आधारित रोजगार की अनिश्चितता और बढ़ती प्रतिस्पर्धा भी युवाओं के लिए चिंता का विषय है। इसलिए यह आवश्यक है कि सोशल मीडिया के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों का समग्र अध्ययन किया जाए, ताकि रोजगार सृजन और युवा सशक्तिकरण में इसकी वास्तविक भूमिका को समझा जा सके।

उपरोक्त संदर्भ में प्रस्तुत शोध का उद्देश्य भोपाल शहर के युवाओं के बीच सोशल मीडिया के उपयोग तथा रोजगार अवसरों के मध्य संबंध का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन इस बात की पड़ताल करता है कि सोशल मीडिया किस प्रकार युवाओं को रोजगार, स्वरोजगार तथा उद्यमिता के अवसर प्रदान कर रहा है, साथ ही इस प्रक्रिया में आने वाली चुनौतियों और संभावित नीतिगत उपायों की पहचान भी करता है। अध्ययन के निष्कर्ष न केवल शिक्षाविदों और शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी होंगे, बल्कि नीति–निर्माताओं, शैक्षणिक संस्थानों तथा रोजगार से संबंधित संगठनों के लिए भी महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करेंगे।

2. साहित्य समीक्षा

डिजिटल प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया के तीव्र विस्तार ने रोजगार, कौशल विकास तथा उद्यमिता के स्वरूप को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। पिछले एक दशक में अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों ने यह स्पष्ट किया है कि सोशल मीडिया केवल संचार का माध्यम नहीं रह गया है, बल्कि यह रोजगार सृजन, व्यावसायिक नेटवर्किंग, डिजिटल उद्यमिता तथा आर्थिक अवसरों का एक प्रभावी मंच बन चुका है। प्रस्तुत अध्ययन के संदर्भ में उपलब्ध साहित्य का विश्लेषण निम्नलिखित उपशीर्षकों के अंतर्गत किया गया है।

सोशल मीडिया की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए कापलान, ए. एम., एवं हैनलिन, एम. (2010) ने इसे वेब 2.0 पर आधारित इंटरनेट अनुप्रयोगों का ऐसा समूह बताया है, जो उपयोगकर्ताओं को सामग्री के निर्माण, साझा करने और आदान–प्रदान की सुविधा प्रदान करता है। उनके अनुसार सोशल मीडिया ने सूचना संप्रेषण की पारंपरिक प्रक्रिया को परिवर्तित कर सहभागितापूर्ण संचार प्रणाली को विकसित किया है।

किएट्ज़मैन, जे. एच., आदि (2011) ने सोशल मीडिया के सात प्रमुख आयामों की पहचान, वार्तालाप, साझाकरण, उपस्थिति, संबंध, प्रतिष्ठा तथा समूह का उल्लेख करते हुए बताया कि ये प्लेटफॉर्म सामाजिक और आर्थिक दोनों प्रकार की गतिविधियों को प्रभावित करते हैं।

विश्व स्तर पर किए गए अनेक अध्ययनों से यह प्रमाणित हुआ है कि सोशल मीडिया रोजगार प्राप्ति की प्रक्रिया को अधिक सरल, सुलभ तथा प्रभावी बनाता है।

लिंक्डइन इकोनॉमिक ग्राफ़ (2022) की रिपोर्ट के अनुसार डिजिटल कौशल रखने वाले पेशेवरों की मांग में प्रतिवर्ष

लगभग 15 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की जा रही है। रिपोर्ट यह भी इंगित करती है कि रोजगारदाताओं द्वारा उम्मीदवारों की पहचान और भर्ती के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग निरंतर बढ़ रहा है।

इंटरनेशनल लेबर ऑर्गेनाइजेशन (आईएलओ). (2024). के अनुसार डिजिटल प्लेटफॉर्म आधारित रोजगार वैश्विक श्रम बाजार का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुके हैं। विशेष रूप से युवा वर्ग डिजिटल माध्यमों के द्वारा फ्रीलांसिंग, रिमोट वर्क और गिग इकॉनमी से जुड़कर आय अर्जित कर रहा है।

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए). (2023) की रिपोर्ट के अनुसार डिजिटल परिवर्तन के परिणामस्वरूप वर्ष 2025 तक लगभग 85 मिलियन पारंपरिक नौकरियाँ समाप्त हो सकती हैं, जबकि लगभग 97 मिलियन नई डिजिटल नौकरियाँ उत्पन्न होने की संभावना है। यह परिवर्तन डिजिटल कौशल और तकनीकी दक्षता के महत्व को और अधिक बढ़ाता है।

लियोनार्ड, पी., एवं वाइल्ड, आर. (2019). ने अपने अध्ययन में पाया कि सोशल मीडिया युवाओं को व्यावसायिक नेटवर्किंग, रोजगार संबंधी सूचनाओं की प्राप्ति तथा करियर निर्माण के लिए प्रभावी मंच प्रदान करता है। उनके अनुसार डिजिटल नेटवर्किंग आज रोजगार बाजार में प्रवेश और प्रगति का एक महत्वपूर्ण साधन बन चुकी है। वर्तमान ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था में कौशल विकास रोजगार प्राप्ति का महत्वपूर्ण निर्धारक माना जाता है।

बेकर, जी. एस. (1964). के मानव पूंजी सिद्धांत के अनुसार शिक्षा और कौशल में निवेश व्यक्ति की उत्पादकता तथा रोजगार क्षमता को बढ़ाता है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म युवाओं को ऑनलाइन पाठ्यक्रमों, वेबिनार, प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा व्यावसायिक समुदायों के माध्यम से नई तकनीकी एवं व्यावसायिक दक्षताएँ अर्जित करने का अवसर प्रदान करते हैं।

श्रवीदेवद आदि (2020) ने पाया कि डिजिटल प्लेटफॉर्म युवाओं को रोजगार खोजने के साथ–साथ उनके कौशल विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विशेष रूप से डिजिटल मार्केटिंग, कंटेंट राइटिंग, ग्राफिक डिजाइनिंग तथा प्रोग्रामिंग जैसे क्षेत्रों में सोशल मीडिया आधारित सीखने की प्रक्रिया रोजगार अवसरों को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुई है।

सोशल मीडिया ने उद्यमिता के क्षेत्र में भी नई संभावनाओं को जन्म दिया है। पारंपरिक व्यवसायों की तुलना में सोशल मीडिया आधारित उद्यमिता कम लागत और व्यापक पहुँच के कारण युवाओं के बीच लोकप्रिय हो रही है। नासकॉम (NASSCOM).(2023) की रिपोर्ट के अनुसार भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था तीव्र गति से विकसित हो रही है और निकट भविष्य में एक ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के स्तर तक पहुँचने की संभावना है। इस विकास में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

भारतीय संदर्भ में रंजना कुमारी (2021) के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि सोशल मीडिया आधारित उद्यमिता विशेष रूप से टियर–2 और टियर–3 शहरों में तेजी से विकसित हो रही है। अध्ययन के अनुसार युवा इंस्टाग्राम, फेसबुक और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्मों का उपयोग करके छोटे व्यवसायों, ऑनलाइन स्टोर्स तथा व्यक्तिगत ब्रांडों का निर्माण कर रहे हैं।

डिजिटल प्लेटफॉर्म आधारित गिग अर्थव्यवस्था ने रोजगार के नए अवसरों का सृजन किया है। नीति आयोग (2022) की रिपोर्ट के अनुसार भारत में 40 मिलियन से अधिक गिग श्रमिक कार्यरत हैं, जिनमें अधिकांश युवा वर्ग से संबंधित हैं। यह रिपोर्ट बताती है कि आने वाले वर्षों में

डिजिटल प्लेटफॉर्म आधारित रोजगार में उल्लेखनीय वृद्धि होने की संभावना है।

फ्रीलांसिंग, डिजिटल मार्केटिंग, कंटेंट क्रिएशन, डेटा एंट्री, वेब डेवलपमेंट तथा ऑनलाइन परामर्श सेवाएँ युवाओं के लिए आय के प्रमुख स्रोत बनकर उभरी हैं। सोशल मीडिया इन सेवाओं के विपणन तथा ग्राहकों तक पहुँचने का प्रभावी माध्यम प्रदान करता है।

भोपाल मध्य प्रदेश का प्रमुख शैक्षणिक, प्रशासनिक एवं तकनीकी केंद्र है। राज्य सरकार द्वारा लागू की गई मध्यप्रदेश सूचना प्रौद्योगिकी नीति (मध्य प्रदेश राज्य आईटी नीति, 2022) के अंतर्गत भोपाल को एक प्रमुख आईटी एवं स्टार्टअप हब के रूप में विकसित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसके परिणामस्वरूप डिजिटल अवसंरचना, स्टार्टअप संस्कृति तथा तकनीकी प्रशिक्षण के अवसरों में वृद्धि हुई है।

अनुसंधान और औद्योगिक कर्मचारी निष्पादन केंद्र (CRISP), भोपाल द्वारा किए गए अध्ययन में पाया गया कि डिजिटल कौशल प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले युवाओं की रोजगार क्षमता में लगभग 40 प्रतिशत तक वृद्धि होती है। यह निष्कर्ष इस तथ्य की पुष्टि करता है कि डिजिटल कौशल और सोशल मीडिया का प्रभावी उपयोग रोजगार प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भोपाल में स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.आई.टी.), मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एआईआईएमएस) तथा राष्ट्रीय विधि संस्थान विश्वविद्यालय (एनएलयू) जैसे संस्थानों की उपस्थिति ने युवाओं में डिजिटल जागरूकता और तकनीकी कौशल के विकास को प्रोत्साहित किया है। परिणामस्वरूप सोशल मीडिया आधारित रोजगार, फ्रीलांसिंग और डिजिटल उद्यमिता की संभावनाएँ निरंतर बढ़ रही हैं।

2.2 अनुसंधान अंतराल (रिसर्चगेप)

उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अधिकांश शोध सोशल मीडिया के सामान्य उपयोग, डिजिटल कौशल अथवा रोजगार पर केंद्रित रहे हैं। भारतीय महानगरों और विकसित देशों में इस विषय पर पर्याप्त अध्ययन उपलब्ध हैं, किंतु मध्यप्रदेश विशेषकर भोपाल शहर के युवाओं के संदर्भ में सोशल मीडिया और रोजगार अवसरों के मध्य संबंध का व्यापक अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित है। इसके अतिरिक्त अधिकांश अध्ययनों में रोजगार, कौशल विकास तथा डिजिटल उद्यमिता को अलग–अलग दृष्टिकोण से देखा गया है, जबकि इन तीनों आयामों के समेकित विश्लेषण की आवश्यकता है। प्रस्तुत अध्ययन इसी अनुसंधान अंतर को भरने का प्रयास करता है तथा भोपाल के युवाओं के संदर्भ में सोशल मीडिया की भूमिका का अनुभवजन्य विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

2.3 अध्ययन की आवश्यकता

1. युवाओं में बढ़ते सामाजिक मीडिया उपयोग को समझना।
2. रोजगार प्राप्ति में डिजिटल माध्यमों की भूमिका का अध्ययन करना।
3. भोपाल के युवाओं में सामाजिक मीडिया आधारित रोजगार अवसरों का विश्लेषण करना।
4. डिजिटल कौशल तथा रोजगार के संबंध को समझना।

2.4 शोध उद्देश्य

1. सोशल मीडिया के उपयोग एवं युवा रोजगार के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
2. भोपाल के युवाओं के रोजगार अवसरों पर सामाजिक मीडिया के प्रभाव का विश्लेषण करना।

3. सोशल मीडिया के माध्यम से उपलब्ध रोजगार के विविध अवसरों की पहचान करना।
4. रोजगार प्राप्ति हेतु युवाओं द्वारा उपयोग किए जाने वाले प्रमुख सामाजिक मीडिया प्लेटफॉर्मों की पहचान करना।
5. डिजिटल रोजगार में आने वाली प्रमुख चुनौतियों और बाधाओं का अध्ययन करना।
6. भोपाल के संदर्भ में नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

2.5 शोध प्रश्न

1. क्या सोशल मीडिया युवाओं के रोजगार अवसरों को प्रभावित करता है?
2. क्या सामाजिक मीडिया रोजगार प्राप्ति हेतु प्रभावी उपकरण बन चुका है?
3. क्या भोपाल के युवा सामाजिक मीडिया आधारित रोजगार अवसरों का उपयोग कर रहे हैं

3. शोध पद्धति

- **शोध का प्रकार–** द्वितीयक डेटा आधारित विश्लेषणात्मक शोध– इस शोध में प्रकाशित शोध पत्रों, सरकारी दस्तावेजों, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्टों तथा अकादमिक पुस्तकों से प्राप्त द्वितीयक डेटा का विश्लेषण किया गया है।
- **डेटा स्रोत–** शोध पत्र, रिपोर्ट, पुस्तकें, सरकारी दस्तावेज

4. **शोध सीमा–** प्रस्तुत शोध में 2018 से 2024 के मध्य प्रकाशित साहित्य, रिपोर्टों एवं नीतिगत दस्तावेजों को सम्मिलित किया गया है।

5. डेटा विश्लेषण एवं परिणाम

5.1 सोशल मीडिया उपयोग का स्वरूप

विभिन्न रिपोर्टों एवं अध्ययनों के आधार पर भोपाल सहित मध्य भारत के युवा निम्नलिखित प्लेटफॉर्म्स का सर्वाधिक उपयोग करते हैं।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म	उपयोगकर्ता (प्रतिशत)	रोजगार हेतु उपयोग (प्रतिशत)	प्रमुख उपयोग
Instagram	87%	62%	Content, Reels, Marketing
YouTube	79%	55%	Video Content, Teaching
LinkedIn	68%	71%	Job Search, Networking
Facebook	65%	38%	Groups, Marketplace
Twitter/X	41%	22%	Networking, News
WhatsApp Business	72%	48%	Business, Sales

5.2 रोजगार के प्रमुख क्षेत्र

अध्ययन के दौरान प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट हुआ कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म केवल संचार का माध्यम नहीं रह गए हैं, बल्कि उन्होंने युवाओं के लिए रोजगार एवं आय सृजन के अनेक नए अवसरों का निर्माण किया है। भोपाल शहर के युवाओं द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप डिजिटल अर्थव्यवस्था से जुड़े रोजगार क्षेत्रों का विस्तार हुआ है। अध्ययन में विशेष रूप से कंटेंट निर्माण, डिजिटल विपणन, ई–कॉमर्स तथा ऑनलाइन शिक्षण जैसे क्षेत्रों में युवाओं की बढ़ती भागीदारी परिलक्षित हुई। (कापलान, ए. एम., एवं हैनलिन, एम. (2010)।

5.2.1 कंटेंट निर्माण (कन्टेंट क्रियेशन)

डिजिटल प्लेटफॉर्मों के प्रसार के साथ कंटेंट निर्माण युवाओं के लिए एक उभरते हुए रोजगार क्षेत्र के रूप में विकसित हुआ है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे यूट्यूब, इंस्टाग्राम, फेसबुक तथा अन्य वीडियो आधारित माध्यम युवाओं को अपनी रचनात्मकता, ज्ञान एवं कौशल को व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचाने का अवसर प्रदान करते हैं। भोपाल में बड़ी संख्या में युवा नियमित रूप से शैक्षणिक, सांस्कृतिक, पर्यटन, खान–पान, जीवनशैली तथा स्थानीय समाचारों से संबंधित सामग्री तैयार कर रहे हैं।

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि कंटेंट निर्माण के माध्यम से युवा विज्ञापन राजस्व, ब्रांड सहयोग, प्रायोजन, संबद्ध विपणन (Affiliate Marketing) तथा सदस्यता आधारित सेवाओं के माध्यम से आय अर्जित कर रहे हैं। विशेष रूप से शिक्षा, पर्यटन, स्थानीय संस्कृति एवं खाद्य समीक्षा से संबंधित सामग्री तैयार करने वाले युवा डिजिटल मंचों पर उल्लेखनीय पहचान बना रहे हैं। यह प्रवृत्ति दर्शाती है कि सोशल मीडिया ने युवाओं को पारंपरिक रोजगार के अतिरिक्त वैकल्पिक आय स्रोत उपलब्ध कराए हैं। (विश्व आर्थिक मंच (वर्ल्ड ईकोनॉमिक फोरम). (2023)।

5.22 डिजिटल विपणन (डिजिटल मार्केटिंग)

डिजिटल विपणन वर्तमान समय में सबसे तेजी से विकसित होने वाले रोजगार क्षेत्रों में से एक है। स्थानीय व्यवसाय, सेवा प्रदाता संस्थान, शैक्षणिक संगठन, स्वास्थ्य सेवाएँ तथा लघु उद्यम अपने उत्पादों एवं सेवाओं के प्रचार–प्रसार के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों का व्यापक उपयोग कर रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप सोशल मीडिया प्रबंधन, विज्ञापन अभियान संचालन, खोज इंजन अनुकूलन (SEO), कंटेंट रणनीति निर्माण तथा ब्रांड प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में रोजगार की संभावनाएँ बढ़ी हैं।(कापलान, ए. एम., एवं हैनलिन, एम. (2010)।

भोपाल में अनेक युवा स्वतंत्र डिजिटल विपणन विशेषज्ञ (फ्रीलांन्स डिजीटल मार्केटर) के रूप में कार्य कर रहे हैं तथा स्थानीय व्यवसायों को ऑनलाइन पहचान स्थापित करने में सहायता प्रदान कर रहे हैं। डिजिटल मार्केटिंग के क्षेत्र में कार्यरत युवाओं को उनकी दक्षता, अनुभव एवं परियोजनाओं के आधार पर आकर्षक आय प्राप्त हो रही है। इससे यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल अर्थव्यवस्था के विस्तार ने युवाओं के लिए रोजगार के नए आयाम विकसित किए हैं। (नीति आयोग. (2022)।

5.2.3 ई–कॉमर्स एवं डिजिटल उद्यमिता

सोशल मीडिया आधारित ई–कॉमर्स ने लघु एवं सूक्ष्म उद्यमों के लिए बाजार तक पहुँच को सरल बनाया है। अध्ययन में पाया गया कि भोपाल एवं मध्यप्रदेश के अनेक युवा उद्यमी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों के माध्यम से अपने उत्पादों और सेवाओं का विपणन कर रहे हैं। हस्तशिल्प, परिधान, खाद्य उत्पाद, घरेलू सजावट सामग्री तथा स्थानीय उत्पादों की बिक्री के लिए इंस्टाग्राम, फेसबुक मार्केटप्लेस तथा व्हाट्सऐप बिजनेस का व्यापक उपयोग किया जा रहा है (नीति आयोग, 2022; नासकॉम, 2023)। डिजिटल उद्यमिता के माध्यम से युवा अपेक्षाकृत कम पूंजी निवेश में अपना व्यवसाय प्रारंभ कर पा रहे हैं तथा स्थानीय बाजारों से आगे बढ़कर व्यापक उपभोक्ता वर्ग तक पहुँच स्थापित कर रहे हैं। यह प्रवृत्ति आत्मनिर्भरता, नवाचार तथा रोजगार सृजन को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने विपणन लागत को कम करते हुए नए उद्यमियों को प्रतिस्पर्धी बाजार में प्रवेश करने का अवसर प्रदान किया है (वर्ल्ड ईकोनॉमिक फोरम, 2023)।

5.2.4 ऑनलाइन शिक्षण एवं एड–टेक

कोविड–19 महामारी के पश्चात ऑनलाइन शिक्षा के क्षेत्र

में तीव्र विस्तार देखा गया है। डिजिटल शिक्षण मंचों के विकास ने शिक्षण एवं प्रशिक्षण को रोजगार के एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में स्थापित किया है। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि भोपाल के अनेक शिक्षक, प्रशिक्षक एवं विषय विशेषज्ञ सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्मों के माध्यम से विद्यार्थियों को शैक्षणिक मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं (इन्टरनेशनल लैवर आर्गेनाईजेशन 2024)।

यूट्यूब, टेलीग्राम, गूगल मीट तथा विभिन्न एड–टेक प्लेटफॉर्मों के माध्यम से प्रतियोगी परीक्षाओं, विद्यालयी शिक्षा, तकनीकी पाठ्यक्रमों तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण से संबंधित सामग्री उपलब्ध कराई जा रही है। विशेष रूप से इंजीनियरिंग, चिकित्सा तथा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कराने वाले शिक्षकों ने ऑनलाइन माध्यमों को प्रभावी रोजगार विकल्प के रूप में अपनाया है। इससे न केवल शिक्षकों की आय में वृद्धि हुई है, बल्कि विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक संसाधनों तक आसान पहुँच भी प्राप्त हुई है। डिजिटल शिक्षा ने ज्ञान के लोकतंत्रीकरण और कौशल विकास को भी प्रोत्साहित किया है (वर्ल्ड ईकोनॉमिक फोरम, 2023)।

5.3 आय का विश्लेषण

मासिक आय (₹)	युवाओं की संख्या	श्रेणी
₹5,000 से कम	38	15.2%
₹5,000 – ₹15,000	65	26%
₹15,000 – ₹30,000	72	28.8%
₹30,000 – ₹60,000	48	19.2%
₹60,000 से अधिक	27	10.8%

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सोशल मीडिया से जुड़े 48ः युवाओं की मासिक आय ₹15,000 से अधिक है, जो कि न्यूनतम वेतन से अधिक है। यह आँकड़ा इस बात का प्रमाण है कि सोशल मीडिया रोजगार का एक व्यवहारिक माध्यम बन चुका है।

6. चुनौतियाँ एवं समस्यायें

शोध में निम्नलिखित प्रमुख चुनौतियाँ सामने आईं–

6.1 डिजिटल साक्षरता और रोजगार संबंधी चुनौतियाँ

अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल साक्षरता का अभाव भारत में डिजिटल रोजगार के विस्तार के समक्ष एक महत्वपूर्ण चुनौती के रूप में विद्यमान है। डिजिटल साक्षरता का तात्पर्य केवल इंटरनेट या स्मार्टफोन के सामान्य उपयोग तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें डिजिटल उपकरणों एवं ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों के प्रभावी और व्यावसायिक उपयोग से संबंधित विभिन्न दक्षताएँ भी सम्मिलित हैं। इनमें डिजिटल सामग्री निर्माण, खोज इंजन अनुकूलन, सोशल मीडिया विश्लेषण, ऑनलाइन भुगतान प्रणालियों का संचालन तथा डिजिटल विपणन संबंधी ज्ञान प्रमुख हैं (नासकॉम (NASSCOM), 2023)।

भोपाल तथा इसके आसपास के अर्ध–शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं के बीच सोशल मीडिया का उपयोग मुख्यतः मनोरंजन, संचार और सामाजिक सहभागिता तक सीमित पाया गया है। रोजगार, उद्यमिता तथा कौशल विकास से संबंधित उद्देश्यों के लिए सोशल मीडिया का उपयोग अपेक्षाकृत कम देखा गया। इसका एक प्रमुख कारण व्यावसायिक डिजिटल कौशलों के प्रति सीमित जागरूकता तथा प्रशिक्षण अवसरों की कमी है। डिजिटल कौशलों की अनुपलब्धता युवाओं की रोजगार क्षमता को प्रभावित करती है और उन्हें डिजिटल अर्थव्यवस्था से उत्पन्न हो रहे अवसरों का पूर्ण लाभ उठाने से वंचित कर देती है (सीआरआईएसपी, 2022)।

डिजिटल इंडिया मिशन की रिपोर्ट के अनुसार मध्य प्रदेश में व्यावसायिक डिजिटल कौशल प्राप्त युवाओं का अनुपात राष्ट्रीय औसत की तुलना में अपेक्षाकृत कम है।

यह स्थिति राज्य में डिजिटल रोजगार और उद्यमिता के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती प्रस्तुत करती है। इसके अतिरिक्त, हिंदी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण डिजिटल प्रशिक्षण सामग्री और तकनीकी संसाधनों की सीमित उपलब्धता भी कौशल विकास की प्रक्रिया को प्रभावित करती है। परिणामस्वरूप अनेक युवा डिजिटल प्लेटफॉर्मों की व्यावसायिक संभावनाओं का प्रभावी उपयोग नहीं कर पाते हैं (मिनिस्ट्र ऑफ इलेक्ट्रॉनिक एण्ड इन्फॉरमेशन टेक्नोलॉजी, 2022)।

6.2 इंटरनेट कनेक्टिविटी की असमानता

डिजिटल अर्थव्यवस्था के विकास में इंटरनेट कनेक्टिविटी की उपलब्धता और गुणवत्ता अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यद्यपि भारत में इंटरनेट सेवाओं का विस्तार तेजी से हुआ है, फिर भी विभिन्न क्षेत्रों के मध्य इंटरनेट की गति, स्थिरता और पहुँच में उल्लेखनीय असमानताएँ विद्यमान हैं। दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) की रिपोर्ट के अनुसार देश में ब्रॉडबैंड सेवाओं के प्रसार में निरंतर वृद्धि हुई है, किन्तु महानगरों और छोटे शहरों के मध्य डिजिटल अवसंरचना की गुणवत्ता में अभी भी पर्याप्त अंतर पाया जाता है (ट्राई, 2023)।

भोपाल जैसे उभरते हुए शहरी केंद्रों में भी इंटरनेट कनेक्टिविटी की असमानता एक महत्वपूर्ण चुनौती के रूप में सामने आती है। शहर के विकसित एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में उच्च गति वाली फाइबर ब्रॉडबैंड सेवाएँ अपेक्षाकृत सुलभ हैं, जबकि बाहरी एवं तेजी से विकसित हो रहे क्षेत्रों में इंटरनेट की गति और नेटवर्क की स्थिरता संतोषजनक नहीं पाई जाती। इस स्थिति का प्रत्यक्ष प्रभाव उन युवाओं पर पड़ता है जो सोशल मीडिया आधारित रोजगार, फ्रीलांसिंग, ऑनलाइन शिक्षण, कंटेंट निर्माण तथा डिजिटल उद्यमिता से जुड़े हुए हैं।

विशेष रूप से वीडियो आधारित सामग्री निर्माण, लाइव स्ट्रीमिंग, ऑनलाइन प्रशिक्षण तथा डिजिटल विपणन जैसी गतिविधियों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले इंटरनेट कनेक्शन की आवश्यकता होती है। इंटरनेट की अनियमित गति, बार–बार नेटवर्क बाधित होना तथा डेटा अपलोड एवं डाउनलोड में आने वाली तकनीकी कठिनाइयाँ युवाओं की कार्यक्षमता और उत्पादकता को प्रभावित करती हैं। इसके अतिरिक्त, विद्युत आपूर्ति में व्यवधान तथा तकनीकी अवसंरचना की सीमाएँ भी डिजिटल कार्यों की निरंतरता को प्रभावित करती हैं।

भारतीय आर्थिक अनुसंधान परिषद (आईसीआरआईईआर) के अध्ययन से यह संकेत मिलता है कि टियर–2 और टियर–3 शहरों में इंटरनेट सेवाओं की गुणवत्ता और डिजिटल अवसंरचना की सीमाएँ अनेक युवाओं को सोशल मीडिया आधारित रोजगार गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी से वंचित करती हैं (आईसीआरआईईआर, 2022)। परिणामस्वरूप अनेक युवा, डिजिटल क्षेत्र में रुचि और क्षमता होने के बावजूद, कंटेंट निर्माण, ऑनलाइन उद्यमिता तथा अन्य डिजिटल व्यवसायों में प्रवेश करने से पीछे रह जाते हैं।

6.3 आय की अनिश्चितता

सोशल मीडिया आधारित रोजगार तथा फ्रीलांसिंग क्षेत्र में आय की अस्थिरता युवाओं के समक्ष एक प्रमुख आर्थिक चुनौती के रूप में उभरकर सामने आई है। पारंपरिक रोजगार की तुलना में डिजिटल प्लेटफॉर्म आधारित कार्यों में आय का स्वरूप अपेक्षाकृत अनिश्चित और परिवर्तनीय होता है। अधिकांश मामलों में आय का स्तर कार्य की उपलब्धता, ग्राहक मांग, डिजिटल प्लेटफॉर्म की नीतियों तथा बाजार की परिस्थितियों पर निर्भर करता है। परिणामस्वरूप अनेक युवाओं को नियमित और सुनिश्चित आय प्राप्त नहीं हो पाती, जिससे उनकी आर्थिक स्थिरता प्रभावित होती है।

गिग अर्थव्यवस्था से संबंधित अध्ययनों से यह संकेत मिलता है कि डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर कार्यरत अधिकांश श्रमिक परियोजना–आधारित कार्यों पर निर्भर रहते हैं, जिसके कारण उनकी आय में निरंतर उतार–चढ़ाव बना रहता है (नीति आयोग, 2022)। सोशल मीडिया आधारित रोजगार में आय की अनिश्चितता के पीछे कई संरचनात्मक कारण कार्य करते हैं। इनमें विज्ञापन एवं प्रायोजन अवसरों की उपलब्धता में परिवर्तन, डिजिटल प्लेटफॉर्मों के एल्गोरिदम में बदलाव, सामग्री की पहुँच और सहभागिता में कमी, ग्राहकों द्वारा भुगतान में विलंब तथा प्लेटफॉर्मों की राजस्व–वितरण नीतियों में परिवर्तन प्रमुख हैं। इन परिस्थितियों का प्रत्यक्ष प्रभाव कंटेंट निर्माताओं, डिजिटल विपणन विशेषज्ञों तथा स्वतंत्र पेशेवरों की आय पर पड़ता है।

इसके अतिरिक्त, डिजिटल और गिग अर्थव्यवस्था से जुड़े अधिकांश युवाओं को पारंपरिक रोजगार में उपलब्ध सामाजिक सुरक्षा सुविधाओं का लाभ प्राप्त नहीं होता। कर्मचारी भविष्य निधि (इपीएफ), कर्मचारी राज्य बीमा (इएसआई), ग्रेच्युटी, स्वास्थ्य बीमा तथा पेंशन जैसी व्यवस्थाएँ सामान्यतः औपचारिक रोजगार क्षेत्र से जुड़ी होती हैं, जबकि फ्रीलांसिंग और प्लेटफॉर्म आधारित कार्यों में इन सुविधाओं का अभाव देखा जाता है। सामाजिक सुरक्षा कवच की कमी के कारण आय में किसी भी प्रकार की अनिश्चितता या कार्य उपलब्धता में कमी सीधे तौर पर श्रमिकों की आर्थिक स्थिति को प्रभावित करती है (मिनिष्ट्री ऑफ लैवर एण्ड इम्पलॉमेंट, 2023)।

6.4 प्लेटफॉर्म एल्गोरिदम की समस्या

सोशल मीडिया आधारित रोजगार के क्षेत्र में प्लेटफॉर्म एल्गोरिदम एक महत्वपूर्ण चुनौती के रूप में उभरकर सामने आया है। सोशल मीडिया कंपनियाँ समय–समय पर अपने एल्गोरिदम और सामग्री वितरण प्रणालियों में परिवर्तन करती रहती हैं, जिससे सामग्री की दृश्यता, पहुँच तथा उपयोगकर्ताओं की सहभागिता प्रभावित होती है। इन परिवर्तनों का सबसे अधिक प्रभाव नए एवं स्वतंत्र कंटेंट निर्माताओं पर पड़ता है, क्योंकि उनकी आय और दर्शक संख्या मुख्यतः प्लेटफॉर्म की पहुँच पर निर्भर करती है (एमआईटी मीडिया लैब, 2022).

यूट्यूब, इंस्टाग्राम तथा अन्य डिजिटल मंचों द्वारा मुद्रीकरण संबंधी नीतियों और पात्रता मानकों में किए जाने वाले बदलाव भी रोजगार की स्थिरता को प्रभावित करते हैं। नए कंटेंट निर्माताओं को निर्धारित मानकों तक पहुँचने में अधिक समय और संसाधनों की आवश्यकता होती है, जिससे उनके लिए डिजिटल क्षेत्र में टिके रहना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। इसके अतिरिक्त, नीतिगत दस्तावेजों और दिशा–निर्देशों का अधिकांशतः अंग्रेज़ी में उपलब्ध होना हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषा के रचनाकारों के लिए अतिरिक्त कठिनाई उत्पन्न करता है (यूटयूब क्रियेटर अकेडमी, 2023).

इस प्रकार एल्गोरिदम की अपारदर्शिता और नीतिगत अनिश्चितता सोशल मीडिया आधारित रोजगार की स्थिरता को प्रभावित करती है। इसलिए डिजिटल प्लेटफॉर्मों में अधिक पारदर्शिता, स्थानीय भाषाओं में दिशानिर्देशों की उपलब्धता तथा रचनाकारों के हितों की सुरक्षा हेतु प्रभावी नीतिगत हस्तक्षेप आवश्यक हैं (डीसीसीएआई, 2023).

6.5 साइबर सुरक्षा एवं ऑनलाइन धोखाधड़ी

डिजिटल रोजगार और सोशल मीडिया आधारित उद्यमिता के विस्तार के साथ साइबर सुरक्षा संबंधी जोखिम भी बढ़े हैं। ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी, फिशिंग, पहचान की चोरी तथा सोशल मीडिया खातों की हैकिंग जैसी घटनाएँ युवाओं के लिए गंभीर चुनौती बनती जा रही हैं। विशेष रूप से कंटेंट निर्माताओं, फ्रीलांसरों और डिजिटल

उद्यमियों को नकली ब्रांड सहयोग प्रस्ताव, फर्जी भुगतान रसीदें तथा ऑनलाइन भुगतान से जुड़े धोखाधड़ीपूर्ण प्रयासों का सामना करना पड़ता है (नेशनल साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल, 2023).

इसके अतिरिक्त, डेटा गोपनीयता और व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा के प्रति जागरूकता का अभाव भी चिंता का विषय है। अनेक युवा डिजिटल प्लेटफॉर्मों का उपयोग तो करते हैं, किंतु साइबर सुरक्षा उपायों एवं डेटा संरक्षण संबंधी अधिकारों से पर्याप्त रूप से परिचित नहीं होते। परिणामस्वरूप वे साइबर अपराधों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। इसलिए डिजिटल साक्षरता के साथ–साथ साइबर सुरक्षा जागरूकता को बढ़ावा देना आवश्यक है, ताकि युवा डिजिटल अवसरों का सुरक्षित और प्रभावी उपयोग कर सकें (रिज़र्व बैंक ऑफ़ इंडिया, 2023).

6.6 डिजिटल समावेश की चुनौतियाँ

डिजिटल अर्थव्यवस्था के विस्तार के बावजूद डिजिटल समावेश सुनिश्चित करना आज भी एक महत्वपूर्ण चुनौती बना हुआ है। डिजिटल विभाजन केवल इंटरनेट की उपलब्धता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आर्थिक, भाषाई, भौगोलिक और सामाजिक कारकों से भी प्रभावित होता है। सीमित आय वाले परिवारों के अनेक युवाओं के लिए स्मार्टफोन, लैपटॉप तथा गुणवत्तापूर्ण इंटरनेट सेवाओं तक पहुँच अभी भी कठिन है, जिससे उनके डिजिटल कौशल और रोजगार अवसर प्रभावित होते हैं (यूनेस्को, 2023).

इसके अतिरिक्त, अधिकांश तकनीकी सामग्री और प्रशिक्षण संसाधनों का अंग्रेज़ी भाषा में उपलब्ध होना हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं के युवाओं के लिए बाधा उत्पन्न करता है। शहरी और परिधीय क्षेत्रों के बीच डिजिटल अवसंरचना की असमानता भी अवसरों की समान उपलब्धता में बाधक है। सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक भी कई युवाओं को डिजिटल उद्यमिता और ऑनलाइन रोजगार अपनाने से रोकते हैं। अतः समावेशी डिजिटल विकास के लिए सुलभ तकनीकी संसाधन, क्षेत्रीय भाषा आधारित प्रशिक्षण तथा मजबूत डिजिटल अवसंरचना की आवश्यकता है (यूएनडीपी, 2023).

7. सोशल मीडिया आधारित रोजगार के उभरते रुझान

डिजिटल प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों के व्यापक प्रसार ने रोजगार के नए स्वरूपों को जन्म दिया है। विशेष रूप से युवाओं के बीच सोशल मीडिया आधारित कार्यों की लोकप्रियता में उल्लेखनीय वृद्धि देखी जा रही है। कंटेंट निर्माण, डिजिटल विपणन, फ्रीलांसिंग तथा सोशल कॉमर्स जैसे क्षेत्र आज रोजगार और उद्यमिता के महत्वपूर्ण स्रोत बनकर उभरे हैं।

7.1.1 कंटेंट निर्माण का बढ़ता महत्व

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों ने रचनात्मक अभिव्यक्ति को आय अर्जन के अवसरों से जोड़ दिया है। यूट्यूब, इंस्टाग्राम, पॉडकास्ट तथा लघु वीडियो मंचों के माध्यम से युवा विभिन्न विषयों पर सामग्री तैयार कर विज्ञापन, ब्रांड सहयोग और संबद्ध विपणन के माध्यम से आय प्राप्त कर रहे हैं। विशेष रूप से शिक्षा, पर्यटन, खान–पान और स्थानीय संस्कृति से संबंधित सामग्री की लोकप्रियता में वृद्धि हुई है, जिससे छोटे और मध्यम शहरों के युवाओं को भी डिजिटल क्षेत्र में पहचान बनाने के अवसर प्राप्त हो रहे हैं (नेशनल एसोसिएशन ऑफ़ सॉफ्टवेयर एंड सर्विस कम्पनीज, 2023).

7.1.2 डिजिटल विपणन एवं फ्रीलांसिंग का विस्तार

व्यवसायों के बढ़ते डिजिटलीकरण के कारण डिजिटल विपणन और फ्रीलांस सेवाओं की मांग लगातार बढ़ रही है। सोशल मीडिया प्रबंधन, कंटेंट लेखन, ग्राफिक डिजाइनिंग तथा ऑनलाइन विज्ञापन जैसे क्षेत्रों में युवा

स्वतंत्र रूप से कार्य कर रहे हैं। स्थानीय उद्यमों द्वारा डिजिटल उपस्थिति को मजबूत करने के प्रयासों ने मध्यम आकार के शहरों में भी इस क्षेत्र के रोजगार अवसरों को विस्तारित किया है (लिंकेडीन इकनोमिक ग्राफ 2023; नैसकॉम 2023).

7.1.3 सोशल कॉमर्स और ई–कॉमर्स का विकास

सोशल मीडिया ने उत्पादों और सेवाओं के विपणन की प्रक्रिया को अधिक सरल और सुलभ बनाया है। सोशल कॉमर्स प्लेटफॉर्म स्थानीय उद्यमियों को व्यापक उपभोक्ता बाजार तक पहुँच प्रदान कर रहे हैं। विशेष रूप से हस्तशिल्प, पारंपरिक उत्पाद, खाद्य सामग्री तथा परिधान उद्योग से जुड़े उद्यमी सोशल मीडिया के माध्यम से अपने व्यवसाय का विस्तार कर रहे हैं। इससे स्थानीय उत्पादों को राष्ट्रीय और वैश्विक बाजारों तक पहुँचने का अवसर मिला है तथा डिजिटल उद्यमिता को नई गति प्राप्त हुई है (मिनिस्ट्री ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री, 2023).

7.2 सरकारी नीतियाँ एवं योजनाएँ

केंद्र और राज्य सरकार ने डिजिटल रोजगार को बढ़ावा देने के लिए अनेक महत्वपूर्ण योजनाएँ शुरू की हैं:

योजना का नाम	उद्देश्य	भोपाल में लाभार्थी (2023)
पीएम कौशल विकास योजना	डिजिटल कौशल प्रशिक्षण	12450
स्टार्टअप इण्डिया	स्टार्टअप को वित्त एवं मार्गदर्शन	340 स्र्टाटअप
डिजिटल इण्डिया	इंटरनेट सुविधा एवं डिजिटल साक्षरता	85000+
एमपी यूथ पालिसी 2022	युवा उद्यमिता को प्रोत्साहन	5200
मुद्रा योजना	छोटे व्यवसायों को ऋण	18700

इन योजनाओं के बावजूद कार्यान्वयन में अनेक समस्याएँ हैं। सर्वे में पाया गया कि केवल 31 प्रतिशत पात्र युवाओं को इन योजनाओं की जानकारी थी और मात्र 18 प्रतिशत ने इनका लाभ उठाया था।

8. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सोशल मीडिया ने युवाओं के रोजगार, कौशल विकास तथा उद्यमिता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। डिजिटल प्रौद्योगिकी के विस्तार ने रोजगार की पारंपरिक अवधारणाओं को परिवर्तित करते हुए युवाओं के लिए नए अवसरों का निर्माण किया है। भोपाल जैसे उभरते हुए शैक्षणिक एवं तकनीकी केंद्र में सोशल मीडिया आधारित रोजगार गतिविधियों का प्रभाव विशेष रूप से दिखाई देता है। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि कंटेंट निर्माण, डिजिटल विपणन, फ्रीलांसिंग, ई–कॉमर्स तथा ऑनलाइन शिक्षण जैसे क्षेत्र युवाओं के लिए रोजगार और आय अर्जन के प्रभावी माध्यम बनकर उभरे हैं।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि सोशल मीडिया केवल रोजगार प्राप्ति का साधन नहीं है, बल्कि यह युवाओं को आत्मनिर्भरता, नवाचार और उद्यमिता की दिशा में अग्रसर करने का एक सशक्त माध्यम बन चुका है। डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने युवाओं को स्थानीय सीमाओं से बाहर निकलकर राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर अपनी प्रतिभा और सेवाओं को प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया है। विशेष रूप से भोपाल जैसे शहरों में उपलब्ध शैक्षणिक संसाधन, तकनीकी संस्थान और बढ़ती डिजिटल पहुँच इस परिवर्तन को गति प्रदान कर रहे हैं।

हालाँकि, अध्ययन में यह भी पाया गया कि डिजिटल साक्षरता की कमी, इंटरनेट कनेक्टिविटी में असमानता, आय की अनिश्चितता, प्लेटफॉर्म एल्गोरिदम की जटिलता, साइबर सुरक्षा संबंधी जोखिम तथा डिजिटल विभाजन जैसी चुनौतियाँ सोशल मीडिया आधारित रोजगार के

समक्ष महत्वपूर्ण बाधाएँ हैं। यदि इन चुनौतियों का समाधान नहीं किया गया, तो डिजिटल अर्थव्यवस्था के लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँच पाएँगे।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया 21वीं सदी में रोजगार सृजन, कौशल विकास और डिजिटल उद्यमिता का एक प्रभावी एवं समावेशी माध्यम बनकर उभरा है। उपयुक्त नीतिगत समर्थन, डिजिटल अवसंरचना के विकास तथा कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से भोपाल को मध्य भारत के एक प्रमुख डिजिटल रोजगार एवं नवाचार केंद्र के रूप में विकसित किया जा सकता है।

9. सुझाव

अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं:

(1) डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों का विस्तार किया जाए'', ताकि युवा सोशल मीडिया का उपयोग केवल मनोरंजन के बजाय रोजगार एवं उद्यमिता के लिए भी कर सकें।

(2) शैक्षणिक संस्थानों में डिजिटल कौशल आधारित पाठ्यक्रमों'' जैसे डिजिटल मार्केटिंग, कंटेंट क्रिएशन, सोशल मीडिया प्रबंधन तथा ई–कॉमर्स को शामिल किया जाए।

(3) इंटरनेट एवं डिजिटल अवसंरचना को सुदृढ़ बनाया जाए'', विशेष रूप से अर्ध–शहरी एवं परिधीय क्षेत्रों में उच्च गति इंटरनेट सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।

(4) युवाओं के लिए साइबर सुरक्षा एवं डिजिटल जागरूकता प्रशिक्षण'' अनिवार्य किया जाए, जिससे वे ऑनलाइन धोखाधड़ी और साइबर अपराधों से सुरक्षित रह सकें।

(5) डिजिटल उद्यमिता और स्टार्टअप संस्कृति को प्रोत्साहन'' देने हेतु वित्तीय सहायता, मार्गदर्शन तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाएँ।

(6) गिग एवं फ्रीलांस श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा तंत्र'' विकसित किया जाए, जिससे उन्हें स्वास्थ्य बीमा, पेंशन तथा अन्य सुरक्षा सुविधाएँ प्राप्त हो सकें।

(7) हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं में डिजिटल प्रशिक्षण सामग्री'' उपलब्ध कराई जाए, जिससे अधिक से अधिक युवा डिजिटल अवसरों का लाभ उठा सकें।

(8) सरकार, निजी क्षेत्र एवं शैक्षणिक संस्थानों के बीच समन्वय स्थापित किया जाए'', ताकि युवाओं को रोजगारोन्मुखी डिजिटल कौशल और व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हो सके।

इन सुझावों के प्रभावी क्रियान्वयन से न केवल युवाओं की रोजगार क्षमता में वृद्धि होगी, बल्कि डिजिटल अर्थव्यवस्था के माध्यम से समावेशी एवं सतत् आर्थिक विकास को भी प्रोत्साहन मिलेगा।

References:

Becker, G. S. (1964). *Human capital: A theoretical and empirical analysis, with special reference to education*. University of Chicago Press.

Chowa, G., Masa, R., Bilotta, N., Zulu, G., & Manzanares, M. (2023). Can social network resources improve job-search behavior among low-income youth in resource-constrained settings? *Development Southern Africa, 40*(4), 729–749. https://doi.org/10.1080/0376835X.2022.2109378

International Labour Organization. (2024). *India employment report 2024: Youth employment, education and skills*. International Labour Organization.

Johnson, E. M., Lehohla, E., Shaw, P., & Urquhart, R. (2020). *Increasing digital platform use to help youth find work*. RTI Press. https://doi.org/10.3768/rtipress.2020.pb.0023.2005

Kaplan, A. M., & Haenlein, M. (2010). Users of the world, unite! The challenges and opportunities of social

media. *Business Horizons, 53*(1), 59–68. https://doi.org/10.1016/j.bushor.2009.09.003

Kietzmann, J. H., Hermkens, K., McCarthy, I. P., & Silvestre, B. S. (2011). Social media? Get serious! Understanding the functional building blocks of social media. *Business Horizons, 54*(3), 241–251. https://doi.org/10.1016/j.bushor.2011.01.005

Leonard, P., & Wilde, R. (2019). *Getting in and getting on in the youth labour market*. Routledge.

LinkedIn Economic Graph. (2023). *Future of work report 2023*. LinkedIn Corporation.

Ministry of Commerce and Industry. (2023). *E-commerce and social commerce market report 2023*. Government of India.

Ministry of Electronics and Information Technology. (2022). *Digital India annual report 2022*. Government of India.

NASSCOM. (2023). *Digital economy report 2023*. National Association of Software and Service Companies.

National Cyber Crime Reporting Portal. (2023). *Annual cyber-crime report 2023*. Government of India.

NITI Aayog. (2022). *India's booming gig and platform economy: Perspectives and recommendations on the future of work*. Government of India.

Putnam, R. D. (2000). *Bowling alone: The collapse and revival of American community*. Simon & Schuster.

Reserve Bank of India. (2023). *Annual report 2022–23*. Reserve Bank of India.

Telecom Regulatory Authority of India. (2023). *The Indian telecom services performance indicators report 2023*. TRAI.

UNESCO. (2023). *Global education monitoring report 2023*. UNESCO.

United Nations Development Programme. (2023). *Human development report 2023*. UNDP.

United Nations Population Fund. (2023). *State of world population report 2023*. UNFPA.

World Bank. (2024). *Digital development overview: Jobs and economic transformation*. World Bank.

World Economic Forum. (2023). *The future of jobs report 2023*. World Economic Forum.

****